

|    |                                     |    |
|----|-------------------------------------|----|
| 32 | ΟΤΕ ΕΠΕΙΝΑΣΕΝ ΑΥΤΟΣ                 | 17 |
| 33 | ΚΑΙ ΟΙ ΜΕΤ ΑΥΤΟΥ. <sup>4</sup> ΕΙΣ- | 16 |
| 34 | ΗΛΘΕΝ ΕΙΣ Τ[ον] Ο[ι]ΚΟΝ             | 16 |
| 35 | ΤΟΥ ΘΥ̅ ΚΑΙ Τ[ο]ΥΣ ΑΡΤΟΥΣ           | 18 |
| 36 | ΤΗΣ ΠΡΟΘΕΣΕΩΣ ΛΑ-                   | 14 |

*Ende der Kolumne korrekt*

*Text:*

*Fragment D Paris ↓ 1. Kolumne: Luk 5,30-36 = 87. Blatt S. 175 Kol. 1 des Codex*

*Beginn der Kolumne korrekt*

|    |                                    |
|----|------------------------------------|
| 01 | πίνετε; <sup>5,31</sup> καὶ ἀπο-   |
| 02 | κριθεὶς Ἰησοῦς εἶπεν πρὸς          |
| 03 | αὐτούς <sup>7</sup> , Οὐ χρειάν ἔ- |
| 04 | χουσιν οἱ ὑγιαίνον-                |
| 05 | τες ἰατροῦ ἀλλὰ οἱ κα-             |
| 06 | κῶς ἔχοντες· <sup>32</sup> οὐκ     |
| 07 | ἐλήλυθα καλέσαι δι-                |
| 08 | καίους ἀλλὰ ἁμαρ-                  |
| 09 | τωλοὺς εἰς μετάνοι-                |
| 10 | αν. <sup>33</sup> Οἱ δὲ εἶπαν πρὸς |
| 11 | αὐτόν, Οἱ μαθηταὶ                  |
| 12 | Ἰωάννου νηστεύου-                  |
| 13 | σιν πυκνὰ καὶ δεή-                 |
| 14 | σεις ποιοῦνται ὁμοί-               |
| 15 | ως καὶ οἱ τῶν Φαρι-                |

<sup>7</sup> Standardtext: ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτούς.